ISSN 2395 - 2997

# आराधना

( समीक्षित धार्मिक शोध पत्रिका )

फरवरी, 2018

सम्पादक

डॉ. ज्ञानधर पाठक

# विषय सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | कालमेव जयते | डॉ. चन्दन मिश्र<br>प्राचार्य<br>श्री रामचन्द्रोतिष कर्म काण्ड संस्कृत महाविद्यालय, दिल्ली-110092 | 3 |
| २. | संस्कृतसाहित्य में पृथ्वी और जीवन की उपादेयता | प्रो. मोहनचन्द्र बलोदी<br>शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष<br>उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड | 10 |
| ३. | वाल्मीकिरामायणे निहितार्षपदानां प्रासंगिकता | डॉ. चन्दनः<br>पूर्वशोधछात्रः, व्याकरणविभागस्य<br>श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विद्यापीठम्, नवदेहली-110016 | 18 |
| ४. | ज्ञानियों में अग्रणी - हनुमान् | डॉ. कल्पना शर्मा<br>सहायक प्रोफेसर- संस्कृत विभाग<br>माता सुन्दरी महाविद्यालय<br>दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली | 23 |
| ५. | रोगपरिज्ञानस्य प्रमुखसिद्धान्ताः | श्रीमतिः मंजुला जारोलिया<br>शोधच्छात्रा-ज्योतिषविभागस्य<br>कविकुलगुरुकालिदाससंस्कृत-विश्वविद्यालयः, रामटेकः, नागपुरम्, महाराष्ट्रम् | 28 |
| ६. | उत्तरसीतारावणसंवादझरीति प्रहेलिकाग्रन्थस्य वैशिष्ट्यविवेचनम् | डॉ. ज्ञानधरपाठकः<br>शोधसहायकः<br>श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विद्यापीठम्, नवदेहली-110016 | 34 |

# ज्ञानियों में अग्रणी हनुमान्

डॉ0 कल्पना शर्मा

प्रस्तुत शोध पत्र के शीर्षक के अंतर्गत हनुमान् रामायण के महत्वपूर्ण पात्र के चारित्रिक विशेषताओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है सर्वप्रथम उनके जन्म तदनन्तर विविध घटनाक्रमों में उनके द्वारा अभिव्यक्त विचारादि के आधार पर प्रत्यक्ष हुए उनके दार्शनिक, वैज्ञानिक, विवेकी स्वरूप को प्रकट किया गया है।

हनुमान जन्म - श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण जन्म के विषय में कहा गया है-

**मारुतस्यौरसः श्रीमान् हनूमान् नाम वानरः।**
**वज्रसंहननोपेतो वैनतेयसमो जवे।।**[1]

ऐश्वर्य वानर वायुदेवता के औरस पुत्र थे हनुमान। उनका शरीर वज्र के समान सुदृढ़ था। वे तेज चलने में गरुड़ के समान थे। सभी श्रेष्ठ वानरों में वे सबसे अधिक बुद्धिमान और बलवान् थे।

**सर्ववानरमुख्येषु बुद्धिमान बलवानपि।**[2]

पुराण में हनुमान जन्म की कथा इस प्रकार प्राप्त होती है। समुद्रमन्थन के समय विष्णु ने देवताओं और दैत्यों में अमृत-वितरण के लिए मोहिनी अवतार लिया। यह देख कर्पूरगौर नीलकण्ठ बहुत चकित हुए।

उनका रेतस् स्खलित हुआ जिसे सप्तर्षियों ने शिव की ही प्रेरणा से राम-कार्य सिद्धि के लिए किया। शिव के एकादश रुद्रावतार के रूप में हनुमान का जन्म हुआ। माता अंजना के तप से प्रसन्न वायुदेव के माध्यम से केसरी और अंजना माता को हनुमान जी को पुत्र रूप में प्राप्ति हुई।

शिक्षा - संपूर्ण शास्त्र, वेद-वेदाङ्ग, कलाओं की शिक्षा हनुमान् को सूर्यदेव ने दी।